भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
IIT INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY
BANARAS HINDU UNIVERSITY

☎ 0542 2366676: e-mail : pro.ppc@itbhu.ac.in

कुलसचिव कार्यालय
(प्रेस एवं प्रचार प्रकोष्ठ)
हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
Office of the Registrar
(Press & Publicity Cell)

दिनांक : 03.04.2019

गुरुजी... बोरिंग पढ़ाई से कैसे मुक्ति मिले

वाराणसी | वरिष्ठ संवाददाता

बीएचयू में स्वतंत्रता भवन के सभागार की सीटें श्री श्री रविशंकर के आने से पहले पूरी तरह भर चुकी थीं। छात्र और शिक्षक दोनों बेसब्री से उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। करीब 5.15 बजे श्रीश्री अपनी चिरपरिचित मुस्कान बिखेरते हुए मंच पर आए। उन्होंने सबसे पर छात्रों से पूछा कि वह उनसे किस विषय पर सुनना चाहते हैं। वे प्रश्न बताएं। इसके बाद तो प्रश्नों की झड़ी लग गई। किसी ने पूछा कि हम कैसे खुश रहें, डिप्रेशन कैसे दूर किया जाए, व्यक्तित्व का विकास कैसे हो, जीवन का उद्देश्य क्या होना चाहिए? जीवन में स्थिरता कैसे आए? एकाग्रता कैसे आएगी?

एक छात्र ने सवाल पूछा कि आत्मबल कैसे बढ़े और मन कैसे अधीन रहे। इसी क्रम में दूसरे छात्र ने सवाल किया कि बोरिंग पढ़ाई में मन कैस लगाएं? इन दोनों सवालों पर खूब तालियां बजीं। इन सवालों को सुनकर श्रीश्री रविशंकर खूब मुस्कुराए। उन्होंने कहा कि इतने प्रश्नों का जवाब एक ही बार में कैसे मिलेगा? इसके बाद उन्होंने बोलना शुरू किया। कुछ मिनट बोलने के बाद उन्होंने छात्रों से पूछा कि अंग्रेजी में सुनना पसंद करेंगे कि हिन्दी में। हाथ उठाएं। अंग्रेजी के पक्ष में किसी ने हाथ नहीं उठाया। इस पर श्रीश्री रविशंकर ने कहा कि 'ठीक है हिन्दी में बोलेंगे'। उनके संबोधन से पहले 20 मिनट की फिल्म भी दिखाई गई, जिसमें आर्ट ऑफ लिविंग और श्रीश्री रविशंकर के बारे में जानकारी दी गई।

10 मिनट तक स्वतंत्रता भवन सभागार ध्यान योग में डूबा रहा

उत्सुकता

- छात्रों ने श्री श्री रविशंकर से पूछे कई तरह के सवाल
- डिप्रेशन, एकाग्रता, स्थिरता जैसे कई प्रश्न थे अहम

मन को मुदित रखने के कुछ उपाय

- हमेशा खुश रहें, अच्छा सोचे
- दूसरों की मदद करें
- कुछ नया करने को सोंचे
- व्यक्तित्व में प्रेम की झलक देखने को मिले
- हमेशा अपने अंदर झांकने की कोशिश करें
- अहंकार से दूर रहें

देश व देव भक्ति सिक्के के दो पहलू

वाराणसी | निज संवाददाता

आध्यात्मिक गुरु भारत रत्न श्रीश्री रविशंकर ने कहा कि देश और देव भक्ति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों की साधना साथ-साथ चलनी चाहिए। श्रीश्री रविशंकर मंगलवार शाम संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में आयोजित ज्ञान चर्चा कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

वाग्देवी मंदिर के कंठाभरण सभागार में श्रीश्री ने विद्यार्थियों को सलाह दी कि वे संस्कृत की शिक्षा के साथ योग साधना भी करें। इससे उनके चेहरे पर चमक आएगी। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि इस विश्वविद्यालय के विद्यार्थी वेद, उपनिषद एवं सांगोपद् आदि ग्रंथों का अध्ययन करते हैं। कहा, यह निरंतर चलते रहना चाहिए। अध्ययन के साथ मंत्र जप भी करें। मंत्र से सब सिद्ध हो जाता है।

उन्होंने कहा कि काशी हमेशा से ज्ञान का स्रोत रही है। यहां के विद्वान सर्वमान्य रहे हैं। देश भर के विद्वानों अपनी समस्याओं के समाधान के लिए काशी के ही विद्वानों से मिलते हैं। काशी के विद्वानों ने धर्म की रक्षा व इसे बढ़ाने में सहयोग किया है, लेकिन उनसे भूल भी हुई है। कश्मीर की परिस्थितियां हम सबके भूल के चलते ही उत्पन्न हुई हैं।

संस्कृत से होता है मस्तिष्क का विकासः दुनिया में शोध से सिद्ध हुआ है कि संस्कृत पढ़ने वालों के मस्तिष्क में अलग शक्तियां जागृत होती हैं। इसलिए वे प्रतिभावान होते हैं। इंग्लैण्ड आदि देशों में भी संस्कृत की शिक्षा दी जा रही है।

विद्वानों का श्रीश्री रविशंकर ने किया सम्मान

श्री श्री रविशंकर ने विद्यार्थियों से कहा कि आपको दुनियाभर में संस्कृत का प्रचार करना है। वेद का उद्धार करना आपका कर्तव्य है। इसके साथ ही इसमें वैज्ञानिक ढंग से शोध करना जरूरी है। इसके पूर्व श्रीश्री रविशंकर ने वाग्देवी मंदिर में दर्शन किया। कुलपति प्रो. राजाराम शुक्ला ने उनका स्वागत किया। श्री श्री रविशंकर ने दो दर्जन से अधिक विद्वानों का सम्मान किया। सम्मानित होने वालों में प्रो. हेतराम कछवाह, प्रो. रमेश द्विवेदी, प्रो. गंगाधर पंडा, प्रो. सदानंद शुक्ल, प्रो. रामपूजन पाण्डेय, प्रो. आशुतोष मिश्र, डॉ. सच्चिदानंद पाण्डेय, प्रो. महेंद्रनाथ पाण्डेय, प्रो. सुधाकर मिश्र, प्रो. विजय कुमार पाण्डेय, प्रो. भगवतशरण शुक्ल आदि विद्वान शामिल रहे।